

TDC-1st (H)

समाजशास्त्र की उपयोगिता

जिस तरह प्रत्येक विषय की अपनी उपयोगिता है, उसी तरह से समाजशास्त्र की अपनी उपयोगिता है। विशेषतः पर माता के संदर्भ में इसकी उपयोगिता कुछ और भी ज्यादा है। राष्ट्रीय समाज के लगभग तमाम क्षेत्रों में विभिन्नताएँ देखी जा सकती हैं। चाहे वे धार्मिक हों या आर्थिक, सामाजिक हों या सांस्कृतिक। दूसरी ओर हम यह भी पाते हैं कि पम्परावादी मूल्यों से हमारा नाता अब भी बना हुआ है, जबकि कुछ आधुनिक मूल्यों को शहरी समुदायों में अधिक से अधिक लोग स्वीकार कर रहे हैं। ऐसी समस्याओं को समझने के लिए समाजशास्त्र काफी उपयोगी है।

इसके अतिरिक्त राष्ट्रीय समाज में अनेक प्रकार की समस्याएँ हैं। जैसे - जातिवाद, सामाजिक असमानता, धूसखोरी अपराध जनसंख्या की समस्या, गरीबी स्थितियों की निम्न सामाजिक स्थिति एवं उनका शोषण

आदि। इन समस्याओं के निदान के लिए हमें उन्हें समझना होगा और उन्हें समझने के लिए सर्वप्रथम हमें अपने समाज को गहराई से समझना होगा। इस क्षेत्र में भी समाजशास्त्र हमारी सहायता करते हैं। समाजशास्त्र निम्नलिखित क्षेत्रों में उपयोगी साबित हुआ है। —

① सामाजिक समस्याओं के निराकरण में सहायक: —

अष्टाचार, निद्रावृत्ति, वैश्यावृत्ति, जातिवाद, बेकारी, गरीबी, पत्नियों और पिछड़ी जाति के साथ अन्याय, बाल अपराध, राजनीतिक अपराध, ग्रामीणों की समस्याएँ आदि। इन समस्याओं को खोजकर समाजशास्त्र निष्पक्ष व्याख्या करता है।

- ② राष्ट्रीय स्वतंत्रता में सहायक
- ③ नयी परिस्थितियों से समझन
- ④ ग्रामीण उत्थान में सहायक
- ⑤ जनजातियों की समस्याओं को दूर करने में उपयोगी
- ⑥ जनसंख्या संबंधी समस्याओं को समझने में उपयोगी
- ⑦ आर्थिक विचार के कार्यान्वयन में सहायक

उपरोक्त तथ्यों से स्पष्ट होता है कि समाजशास्त्र की उपयोगिता काफी व्यापक है। इसके अध्ययन से न केवल हमें समाज की जानकारी होती है, बल्कि अन्य समाजों की भी मिल जाती है। इस प्रकार समाजशास्त्र की बहुत ही उपयोगिता है।

Smita Kumari
Guest teacher